ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-4* Issue-8* September- 2019
Innovation The Research Concept

नयी कविता में आलंकारिक सौन्दर्य

सारांश

काव्य में अनुभूति का मात्र कथन हीं नहीं किया जाता वरन् विशिष्ट अर्थ और सन्दर्भ में शब्दों का इस प्रकार प्रयोग किया जाता है कि अनुभूति साकार हो उठे। काव्य में यह 'विशिष्टता' अलंकारों के द्वारा ही आती है। अलंकार वाणी के आचार–व्यवहार, रीति–नीति हैं, पृथक–स्थितियों के पृथक् स्वरूप, भिन्न अवस्थाओं के भिन्न चित्र है।' वे वाणी के हास, स्वप्न, पुलक, हाव–भाव है।' भारतीय एवं पाश्चात्य प्रायः सभी आचार्यों ने काव्य में अलंकार–विधान की आवश्यकता एवं महत्व पर विशेष बल दिया है। अनेक ग्रीक एवं रोमन आचार्यों ने काव्य में विषय की अपेक्षा शैली को अधिक महत्व प्रदान करते हुए अलंकृति को ही काव्य का सर्वप्रमुख तत्व स्वीकार किया है। साहित्य कला अलंकारों के साधन से, न कि प्रत्ययों के द्वारा अर्थ की अभिव्यक्ति करती है। सच तो यह है कि अलंकार ही कवि के अर्थों के शारीरीकरण का उपाय है।'

रीशू अग्रवाल
शोध छात्रा
हिन्दी, रामनगर पी0जी0 कालेज
रामनगर बाराबंकी, भारत

डिमिट्रियस का कथन है : 'प्रायः विषय तो स्वभाव से अनाकर्षक एवं विकर्षक होता है, लेखक के द्वारा ही उसमें दीप्ति आती है।' यह दीप्ति मुख्यतः शब्दालंकारों एवं अन्य विभिन्न गुणों के प्रयोग से आती है, किन्तु इनमें सबसे अधिक महत्व अलंकारों का माना गया है। होमर जैसे प्राचीन कवियों ने भी अलंकृति द्वारा ही अपने काव्य को आकर्षक एवं प्रभावशाली बनाया था। इस वाणी–विभूषणों का भारतीय काव्यशास्त्र में और भी अधिक मान हुआ है।''

अलंकार : व्युत्पत्ति, अर्थ और परिभाषा

'अलम्–क्रियते अनेन इति–अलंकारः' अर्थात् जो अलंकृत या भूषित करे वह अलंकार है। आचार्य वामन के अनुसारः 'साधर्म्य अथवा सादृश्य के द्वारा वस्तु अथवा अर्थ के सौन्दर्य का उद्घाटन अलंकार कहलाता है।'' अलंकार का प्रारम्भिक अर्थ संस्कृत काव्य–शास्त्र के अन्तर्गत समग्र चारूत्व था। आगे चलकर विभिन्न काव्य–सिद्धान्तों की स्थापना के उपरान्त यद्यपि अलंकार को चारूता की विविधता का गौरव उसे अवश्य मिला।''

भामह के अनुसार 'शब्द और अर्थ की वक्रता ही वाणी का इष्ट अलंकार है। दण्डी 'काव्य के शोभाकारक धर्म को अलंकार कहते है।' रूद्रट अभिव्यक्ति के विशेष प्रकार को अलंकार मानते है तथा महर्षि वेदव्यास के मतानुसार 'अलंकार से विहीन वाणी विधवा के समान है, जो व्यक्ति को उल्लसित नहीं कर पायी।' उपर्युक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट है कि अलंकारवादी, रीतिवादी और वक्रोक्तिवादी आचार्यों ने अलंकार विधान को काव्य का प्राणभूत, नित्य और आंतरिक तत्व माना है। कुन्तक इसे उक्ति को काव्यत्व प्रदान करने वाला मूल–भूत तत्व मानते है। इसके विपरीत रसवादी एवं ध्वनिवादी आचार्यों के अनुसार काव्य में अलंकार की स्थिति कटक–कुण्डल के समान है। आधुनिक आलोचना में इसे काव्य के एक आंतरिक तत्व के रूप में काव्याभिव्यक्ति का अनिवार्य साधन माना जाता है। वस्तुतः अलंकार रस की अभिव्यक्ति के अनिवार्य माध्यम है और सुन्दर काव्य अलंकृत सरस अर्थों की अभिव्यक्ति ही है।

नयी कविता में आलंकारिक सौन्दर्य

नयी कविता में वैयक्तिक, बौद्धिक एवं वैज्ञानिक दृष्टि का अद्भुत सामंजस्य है। नये सन्दर्भ और नयी सौन्दर्य दृष्टि के परिणामस्वरूप उसके अलंकार विधान में भी पर्याप्त मौलिकता एवं नूतनता मिलती है। नयी कविता में शास्त्रीय दृष्टि से नहीं सौन्दर्यशास्त्रीय दृष्टि से अलंकारों की योजना की गई है। यथार्थ जीवन की सहज अभिव्यन्जना के प्रति आग्रहवश नयी कविता में अलंकारों का घटाटोप या सायाम ग्रहण सामान्यतः नहीं हुआ। रचना प्रक्रिया में अंतर्ग्रथित होकर, भावानुभूति के अंगभूत रूप में ही उनकी नियोजना हुई है। यहीं कारण है कि शब्दालंकारों का यहां एकान्त अभाव है, केवल अनुप्रास की लयानुकूल योजना मिलती है। जीवन के सभी क्षेत्रों से उपमानों का चयन किया गया है। इतिहास, पुराण, संस्कृति, धर्म, समाज, राजनीति, विज्ञान, प्रकृति,

मनोविज्ञान और जीवन में दैनंदिन व्यापारों से उपमानों का निरायास चयन देख एक सुखद आश्चर्य होता है। यूं ढूंढने पर सम्भवतया सभी शास्त्रीय अलंकारों के उदाहरण नयी कविता में मिल जायेगे किन्तु अधिकांशतः उपमा, रूपक और मानवीकरण का व्यवहार ही अधिक किया गया है। नवीन विशेषणों की हृदयकारी योजना द्वारा नयी कविता की नूतनता में विलक्षण वृद्धि हुई है। लक्षणा और व्यंजना की अनेक–नूतन पद्वतियों के सूत्रपात द्वारा नये कवियों ने कविता की प्रभविष्णुता एवं संप्रेषणीयता में अकल्पनीय अभिवृद्धि की है। नयी कविता के आलंकारिक सौन्दर्य का अध्ययन वहां क्रमशः उपमान विधान, नवीन विशेषणों का नियोजन तथा लाक्षणिक प्रयोग उपशीर्षकों के अतंर्गत किया जायेगा।

नूतन उपमान विधान

नये कवियों ने अपनी मौलिकता एवं विश्लेषणात्मक प्रवृत्ति का परिचय देते हुए ज्ञान–विज्ञान और जीवन के असंख्य क्रिया–व्यापारों से नूतन तथा विविध वर्गीय उपमानों का चयन किया है। जीवन का कोई भी क्षेत्र अथवा पक्ष इनकी उपमान सीमा में प्रवेशाधिकार से वंचित नहीं रहा। पारम्परिक उपमानों का नये संदर्भों में, नयी चमक एवं दीप्ति के साथ प्रयोग नए अर्थ स्तरों को ध्वनित करता है। बुद्धि प्रेरित उपमानों के निरंकुश एवं नितान्त वैयक्तिक प्रयोगों के फलस्वरूप कहीं–कहीं दुरूहता व अस्पष्टता भी आ गई है, किन्तु जहां ये उपमान काव्यानुभूति का अंग बनकर आये है, वहां अभिनव सौन्दर्य की व्यंजना में सक्षम है। नयी कविता में साम्य विधान को सभी विधियों का व्यापक विधान मिलता है। यू ंतो सादृश्य, साधर्म्य तथा प्रभाव साम्य सभी का प्रयोग नये कवियों ने सफलतापूर्वक किया है, किन्तु आकृति, गुण अथवा क्रिया साम्य की अपेक्षा इनकी दृष्टि, प्रभावसाम्य पर ही मूलतः केन्द्रित रही है।

स्रोतों के आधार पर यदि नई कविता के उपमान–विधान पर दृष्टिगत किया जाय तो एक सुखद विस्मय होता है। छिछली भावुकता की धुन्ध से मुक्त कवि बुद्धि, तर्क और विश्लेषण की प्रवृत्ति से युक्त है। विज्ञान, टेक्नोलॉजी और विविध ज्ञान क्षेत्रों के जीवन में अतिशय प्रसार ने उनकी मानसिकता को गहराई से प्रभावित किया है। फलतः वैज्ञानिक उपकरणों का उपमान रूप में प्रयोग कर इन्होने अभिव्यजना शिल्प ने नूतन द्वारों का उद्घाटन किया है। 'नायलोन सा पारझीना खुला मौसम', बिगड़े लाउडस्पीकर से निःशब्द खुले मुख', वार्निश से पुते हुए चेहरों पर रेडियों एक्टिव धूल की जीम हुई परतें,' 'टाइपराइटर–की' तरह बारी–बारी उठते सबके पैर, 'सर्च लाइट की मन्द बैटरी–सी छाती', पूर्जो सा बेजान मध्यवर्गीय जीवन', जैसे न जाने कितने वैज्ञानिक उपकरणों को नये कवियों ने उपमान रूप में चुना है और अपनी विविध मन' स्थितियों की कलात्मक अभिव्यंजना की है।

नयी कविता उस वृक्ष की तरह है जो नवयुग की धरती पर जितना ऊॅचा खड़ा है, उनता ही उसी जड़े पुरातन संस्कृति के अतल लोक में गहरे गड़ी है। यही कारण है कि आधुनिक भाव बोध की अभिव्यक्ति हेतु ये कवि सांस्कृतिक, पौराणिक, ऐतिहासिक और धार्मिक कोटि के उपमानों का चयन भी अत्यन्त हार्दिकता के साथ करते है। भारती को जाड़े की मनहूस शाम 'यम की चिड़िया' सी लगती है और 'परछाई', युधिष्ठिर के पीछे–पीछे चलने वाले काले कुत्ते सी। मलयज को ज्योतिपुरूष सूर्य 'निर्मोही गौतम' सा लगता है, नरेश मेहता ने अग्नि को शिव–निर्माल्य, फुहार की शिवा और पीठ को नान्दी से उपमित किया है। उन्हें 'अधलिखे पन्ने दुर्वासा की भांति शाप देते हुए लगते हैः इस प्रकार पौराणिक उपमानों की सफल आयोजना द्वारा नये कवियों ने अपने सौन्दर्य–बोध को नया परिप्रेक्ष्य और नयी दिशा प्रदान की है।

ऐतिहासिक उपमान नयी कविता में अपेक्षाकृत कम प्रयुक्त हुए है, तथापि उनका एकान्त अभाव नहीं है। नरेश मेहता को 'उदास, मलिन चांदनी परित्यक्ता दमयन्ती–सी' लगती है। वे 'इतिहास के दावेदार' कविता में सिकन्दर को उपमान रूप में इस प्रकार प्रयुक्त करते हैः 'हम ब इतिहास के गलियारों में, विजयी सिकंदर से टहल रहे।' गिरिजा कुमार माथुर ने पत्र को 'कमल की पंखड़ी पर लिखा शकुन्तला का गीत' अथवा 'उनीदें नयन में अनिरूद्धमय उषा का सपना, कहकर ऐतिहासिक उपमानों की कुशल योजना की है।

सभी नये कवियों ने, प्रकृति के अक्षय कोष से, विपुल परिमाण में उपमानों का चयन किया है और इनका सारगर्भित प्रयोग कर अपनी रचानाओं को आधुनिक बोध से संपृक्त किया है। नये संदर्भों में प्रयुक्त होकर ये उपमान अनूठी व्यंजना से संपन्न हो गए है तथा नयी कविता की संप्रेषणीयता को बढ़ाने में सहयोगी बने है। युगों से प्रयुक्त प्रकृति–तत्वों को नये कवियों ने अपनी पारस प्रतिभा के स्पर्श से एक अनोखी दीप्ति और नव्यता प्रदान की है। अज्ञेय के लिए कवि का स्वानुभव एक बनानल के समान है 'मै ही वह बनानल हूॅ–/जिसमें मैं ही/अनुपल जलता हूॅ। ऐसी ही एक भावव्यंजक प्रयोग और देखिएः

'चेतना की मेखला–सी/जीवनानुभूतियों की पहाड़ियों के बीच मेरी/विनम्र कृतज्ञता/फैल गयी खुले आकाश–सी।'

गिरिजा कुमार माथुर ने बरसात के काले बादलों के लिए नये उपमानों की योजना की हैः काले अगरू से उठे आज बादल/ये मिट्टी की गंध सी सोंधी हवाएं/ये जामुन के रंग सी नीली घटायें।' उन्हें 'उड़ता हुआ उत्तरीय मलय पवन–सा' प्रतीत होता है। भावना की आयु के लिए उन्होने मत्स्यगन्धा का नया एवं आकर्षक उपमान चुना हैः भावना की आयु मत्स्यगन्धा सी जवान रहे। धर्मवीर भारती को प्रेयसी की लचीली, कोमल देह वीर लदी नाजुक टहनी–सी' प्रतीत होती है। 'अंधयुग' में वे सर्वथा नूतन प्राकृतिक उपमानों का अर्थगर्भित प्रयोग कर समूचे प्रसंग को अनूठी व्यंजकता से भर देते है।

'तोड़ी हुई मर्यादा/कुचले हुए अजगर–सी/गूंजलिका से कौरव–वंश को लपेट कर/सूखी लकड़ी–सा तोड़ डालेगी।'

भारती के लिए यह युग एक अन्ध समुद्र है/चारों ओर से पहाड़ों से घिरा हुआ/और दर्रों से/और गुफाओं से/उमड़ते हुए भयानक तूफान चारों ओर से मथ रहे है।' ऐसे विराट् उपमानों के सथ उन्होंने अतिशय मृदुल उपमानों की भी योजना की है। फूलों के समान कामोत्तेजित सुन्दर शरीर के लिए 'पिघले फूलों की रसवन्ती आग का प्रयोग कितना सार्थ है।

इस प्रकार नयी कविता में प्राकृतिक उपमानों की विविधता, नूतनता और भावाभिव्यंजकता देखकर कवियों की कल्पना शक्ति, मौलिकता एवं अर्थगाम्भीर्य का सुन्दर परिचय मिलता है। पुरातन उपमानों को नूतन उपमेयों के साथ प्रयुक्त कर नये कवियों ने उन्हें नये सन्दर्भ और नवल कांति प्रदान की है। नयी कविता काव्योपयुक्त उपमानों की परम्परागत परिधि को तोड़ ब्रह्मांडीय विस्तार में घूमी है, और जीवन के जाने–अनजाने क्षेत्रों से उसने टटके, अछूते और सर्वथा नूतन उपमानों का संधान किया है जिनका राशि–राशि सौन्दर्य अपनी अनोखी भंगिमा से मन–प्राण को अभिभूत कर लेता है। नयी कविता में नव्य उपमानों का यह विपुल वैभव सभी नये कवियों में प्रचुर परिमाण में प्राप्य है। अज्ञेय नदी के लिए एक ऐसे ही नूतन उपमान का विधान करते है 'ज्यों क्वांरेपन की केंचुल में यौवन की गति उद्याम प्रबल'/सागर तट की सीपियां जैसे दर्द की आंखे फटी–सी' जैसे भावव्यंजक उपमानों की जितनी ही प्रशंसा की जाय कम है। गिरजाकुमार की कविताओं में 'छत–सी खुली हुई छाती' 'आइनों से गांव, 'घुले मुख–सी धूप यह गृहिणी सरीखी', 'कसे धनुश से वक्र ओंठ', 'कान जैसे पाल चौड़े, 'गोद तारक–चावलों से सांझ की भर दी निशा ने' जैसे अनगिनत सुन्दर उपमान भरे पडे है।

मुक्तिबोध गहन मानसिक अंतर्द्वन्द्वों और तीखे सामाजिक अनुभवों के कवि है। उनके द्वारा प्रयुक्त सभी उपमान अंतर्मथन की वेदना में तपे हुए जीवन्त उपमान है। 'अपनी अपराधी कन्या की चिन्ता में माता–जी वेकल/उद्विग्न रात, मैदान सूँघते हुए हवाओं के झोके, 'अनगिन दशमलव से सितारे, 'मेहनती गरीब के किसी रोगग्रस्त, क्षीणकाय किन्तु भोले शिशु–सा, 'मैली बासी धोती सी मेरी यह तुच्छ आत्मा,' 'अंधकार स्तूप सा भयंकर बरगद, 'जैसे न जाने कितने नितान्त मौलिक, जीवन की भट्ठी में धधकते हुए उपमान मुक्तिबोध के काव्य संसार में बिखरे है।

नरेश मेहता लहरों की गोलाई को चूड़ी की तरह तथा उसके साथ उठने वाले झाग को क्लिप कहते है। बदली को वनजारिन, अन्धकार को 'काले मजदूर–सा' आकाश को लोमड़ियों की तरह चालाक, शाम को 'फटे हुए विज्ञापन–सी', आदि कहकर वे अपनी यथार्थवागाहिनी दृष्टि का परिचय देते है। उनके शब्दों में हम विकल्प के वल्कल में संशय विष पीड़ित, किसी भग्न मस्तूल सरीखे खड़े हुए है। 'सिसक–रहा कोढ़ी सा जीवन, 'दूर द्रोणियां, मुनि पत्नी–सी देवदार के केश सुनहले सुखा रही है' तथा 'रीछ सरीखा खड़ा हुआ है यह कागों का काला जंगल। शमशेर का एक नूतन उपमान देखिएः 'प्रातः नभ था बहुत नीला शंख जैसे/भोर का नभ/राख से लीपा हुआ चौका/(अभी गीला पड़ा है)' 'जानबूझ कर नहीं जानती' शीर्षक कविता में शकुन्त माथुर की नूतन उपमानों की लड़ी कैसी हृदयाकर्षक है।

'आज मुझे लगता संसार खुशी में डूबा–/मां ने पाया अपना धन ज्यों/बहुत दिनों का खोया,/बहुत बड़ी क्वांरी लड़की को सुधर मिला हो।
दूल्हा,/मैल भरी दीवारों पर राजों ने फेरा चूना/किसी भिखारिन के घर में, बहुत दिनों के/पीछे, मन्द जला हो चूल्हा/बूढे की काया में फिर से एक बार/यौवन हो कूदा।''

केदारनाथ सिंह, रघुवीर सहाय, श्रीकांत वर्मा आदि की कविताओं में मामूली दैनंदिन जीवन के अत्यंत दुर्लभ उपमान भी बड़ी सादगी से प्रयुक्त हुए है। 'चूल्हे की राख से–सपने सब शेष हुए', 'बच्चों की सिसकियां भीतों पर चढ़ती, छिपकलियों–सी बिछल गयी', 'बाजारों के सौदें जैसे जीवन के क्षण', 'तुमसे स्वेद मुद्रा ले, तौल दिए समय ने बासी सब्जियों से, वासी ये क्षण', इस प्रकार नयी कविता में अप्रस्तुत विधान की पुरानी रूढ़ परिपाटी को तोड़ा है और जीवन के अनगिनत क्षेत्रों से अभिवन उपमान लाकर अपनी उपमानयोजना में नये रंग, नये भाव और स्वर भरे हैः

1. मूर्त–अर्मूत उपमान योजना–नये कवियों के अप्रस्तुत विधान में प्रभाव साम्य को गहराने की प्रवृत्ति अधिक है फलतः सभी प्रकार की मूर्तामूर्त उपमान योजना नयी कविता में मिलती है। कपिपय उदाहरण पर्याप्त होगेंः
2. **मूर्त के लिए मूर्त उपमान–'रूधिर–सी संध्या टपकती थी, पहाड़ी के उरोजों पर, 'आयु–सी लम्बी क्यू', 'दुम हिलाते हुए कुत्ते–सा शरीर', 'सीली हुई दियासलाई की तरह असहाय लोग', ऐस्थमा के रोगी–सा स्टोव', 'क्लर्क की फाइल जैसी भारी ऑखे', आदि।**
3. मूर्त के लिए अमूर्त उपमान–इस प्रकार की उपमान योजना अपेक्षाकृत कठिन होती है। नयी कविता में मूर्त प्रस्तुत के लिए अमूर्त अप्रस्तुत का विधान काफी कम हुआ है। कुछ उदाहरण देखिये। 'बिछी पैरों में नदी, ज्यों दर्द की रेखा', 'सन्यासी के मन जैसा, कैसा प्रदेश यह निर्विकार सम्बन्धहीन', 'डूबे दिल–सा ही बैठा, शांत मगर प्राचीन, 'यह मरीज की सांसों–सी, टेढ़ी–मेढ़ी पगडंडी'आदि।
4. अमूर्त के लिए मूर्त उपमान–नये कवियों ने मूल संवेदना को हृदयगंम करके अमूर्त के लिए मूर्त अप्रस्तुतों की योजना अत्यंत कुशलतापूर्वक की है। जैसे–मुर्दे की ऑख–सी पथरायी हुई खामोशी', 'कछुवे–सी मेरी आत्मा', सुख का यह कंचन मृग', 'खगों से उड़ रहे जीवन क्षण', 'बड़े गाझिन गंधयुक्त गुच्छों–सा भविष्य', 'युग लगता है एक दफ्तर की खाली कुर्सी–सा', 'फटे दूध–सा जर्जर मन', 'खट्टे–मीठे आमों से अनुभव आदि।
5. अमूर्त के लिए अमूर्त उपमान–इस प्रकार के उपमान विधान हेतु अत्यंत समृद्ध कल्पनाशक्ति की अपेक्षा है,

फलतः नयी कविता में अमूर्त के लिए अमूर्त उपमानों की योजना न्यून है। नये कवि की कल्पना पर सर्वेत्र बौद्धिकता का अंकुश लगा है अतः कल्पना का मुक्त स्वच्छंद बिहार यहां प्रायः नहीं मिलता। फिर भी, इस कोटि के उपमान विधन के कुछेक सुन्दर उदाहरण नयी कविता में देखे जा सकते है। 'टूटते–तीखे नशे–सी याद', 'बेले की मीठी महक, एक नूतन स्वप्न–सी मंडरा रही है', 'तेरी तान जैसे एक जादू–सी मुझे बेहोष करती है', 'जिसकी सुधि आते ही पड़ती ऐसी ठंडक इन प्राणों पर/ज्यों सुबह ओस गीले खेतों से आती है/मीठी हरियाली खुशबू मंद हवाओं में।'

6. प्रमुख अलंकार–नये कवियों की दृष्टि सामान्यतः शास्त्रीय अलंकारों के परम्परागत विधान की ओर नहीं रही तथा नयी कविता में कवियों की सृजनात्मक कल्पना का उन्मुक्त वैभव अनेकानेक रूपाकारों में ढला है। उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, मानवीकरण, दृष्टान्त, अपहृ श्रुति, विशेषण–विपर्यय आदि अलंकारों की सुरम्य योजना में नये कवि किसी भी अन्य युग के कवियों से पीछे नहीं रहे। नये कवियों के नूतन सौन्दर्य बोध की बानगी हेतु, प्रमुख अलंकारों के कुछ उदाहरण प्रस्तुत है।
7. रूपक–रूपक नये कवियों का सर्वाधिक प्रिय अलंकार है। नरेश मेहता, अज्ञेय, सर्वेश्वर, गिरिजा कुमार, कुँवर नारायण आदि कवियों के रूपक नहीं कविता के अनुपम श्रृंगार है। अज्ञेय की 'बाबरा अहेरी', सर्वेश्वर की 'भोर', 'कल रात', 'संध्या का श्रम', कॉफी हाउस में मेली ड्रामा', नरेश मेहता की 'समय देवता' अपने सशक्त सांगरूपकों की रचनार्थ अविस्मरणीय रहेगी। कुँवर नारायण का एक ऐसा ही नव्य रूपक देखिए : चितकबरी नागिर–सी/भाग रही शीत रात/लुक–छिप कर आशंकित/लहराती पौधों में/बिछलन–सीत चमकदार,/छोड़ गई कोहरे की/केंचुल अपने पीछे/हंसती ठंडी बयार। नये कवियों ने सामाजिक वैषम्य के संदर्भ में, पौराणिक प्रतीकों के साथ संबद्ध कर सफल सांगरूपकों की रचना की है। जगदीश गुप्त, भारती एवं गिरिजा कुमार के रूपक अत्यंत संक्षित है जबकि नरेश मेहता तो सच्चे अर्थों में रूपकों के कवि है। उनकी 'समय देवता', 'किरन धेनुएं' और उषस्' शीर्षक रचनायें अपनी सहज बोधगम्यता और भव्य उदात्त कल्पना हेतु सदा याद की जायेगी।
8. मनवीकरण–छायावादी कवियों का चहेता मानवीकरण नये कवियों की कल्पना द्वारा संवारा जाकर उत्तरोत्तर विकास की नूतन मंजिलों की ओर अग्रसर हुआ है। आधुनिक युगबोध और यथार्थ से समन्वित नयी कविता के मानवीकरण एक भिन्न आस्वाद प्रदान करते है। कुँवर नाराया, शकुन्त माथुर, गिरिजा कुमार, भारती, अज्ञेय आदि के मानवीकरण नयी कविता की भव्य उपलब्धि है। जगदीश गुप्त की 'क्षीर सागर में नहाकर लौट आई रात', केदारनाथ सिंह की 'शरद प्रांत', साही की 'रात में गांव', हरिनारायण व्यास की 'शिशिरान्त', भारती की 'कस्बे की शाम' गिरिजा कुमार की 'अभी तो झूम रही है रात, 'चॉदनी गरबा', 'ढीठ चॉदनी', 'आई बरसात आज', 'भारती की 'घाटी का बादल', कुँवर नारायण की 'जाड़ों की सुबह' आदि अनेक कवितायें मानवीकरण की सफल योजना के लिए उल्लेखनीय है। सर्वेश्वर द्वारा चित्रित पहाड़ी ग्राम का एक सुन्दर मानवीकृत दृश्य देखिएः

आकाश का साफा बॉधकर/सूरज की चिलम खींचता/बैठा है पहाड़/घुटनों पर पड़ी है नदी चादर–सी/पास ही दहक रही है/पलास के जंगल की अंगीठी/अंधकार दूर पूर्व में/सिमटा बैठा है भेड़ों के गल्ले–सा।'

उत्प्रेक्षा, परिकर, रूपकातिशयोक्ति, अपह्न ुति, भ्रान्तिमान, विशेषण विपर्यय आदि के अनेक उदाहरण नयी कविता में विद्यमान है। शास्त्रीय अलंकारों का नूतन संदर्भों में प्रयोग कर नये कवियों ने इनसे नयी अर्थ–व्यंजनायें कराई है।

9. **अभिनव विशेषण** – नयी कविता के आलंकारिक सौन्दर्य का एक बहुत बड़ा हिस्सा नये विशेषणों के सार्थक प्रयोग में निहित है। ताजगी से भरपूर नये विशेषणों के द्वारा नयी कविता में अगाध मार्मिकता, अपूर्व अर्थ गाम्भीर्य और अनूठे उक्ति बैचित्र्य का समावेश हो गया है। सहमी सड़क, दुबकी धूप, डबडब ऑखे, जिद्दी सॉझ, मोरपंखी रात, गुब्बारा औरतें, अनमने जंगल, दकियानूसी मिट्टी, निर्गन्ध वर्तमान, खजूर बांहे, कुलिश वर्षा, यायावर आत्मा, चिड़चिड़ी धूप, साहसी डैने, आहत प्रतीक्षा, बहकी धूप, आसमानी शराब, अन्नर्षी बादल, मनहूस अंधियारा, बेचैन फूल, रोगी ख्याल, गुनगुना आलोक, अंधी आस्था, अजन्मे शब्द जैसे न जाने कितने नये–से–नये विशेषण नयी कविता में बिखरे पड़े है, और उसकी एक अलग पहचान बनाने में सहायक हुए है। ये विशेषण नये कवियों की व्यक्तिगत और युगमत नूतन संवेदनाओं की अभिव्यक्ति में विशेष रूप से सहयोगी रहे है।
9. **नया उक्ति वैचित्र्य**–नई कविता के वैशिष्ट्य का एक महत्वपूर्ण आधार उसका नूतन उक्ति– वैचित्र्य भी है। लाक्षणिक प्रयोगों की दृष्टि से नयी कविता पिछली काव्यधाराओं से बिल्कुल भिन्न है। मूलतः सीधी सरल अभिव्यंजना को दृष्टि में रखते हुए भी इन कवियों की कविताओं में लक्षणा और व्यंजना के अनेक नूतन एवं सूक्ष्म प्रकार प्रस्तुत हुए है। एक उदाहरण प्रस्तुत हैः

'देख लो नजर उठा/कितना बड़ा हूँ मैं/आगरे का ताज/यह व्यक्तित्व मेरा है/चीन की दीवार/यह अस्तित्व मेरा है।

लाक्षणिकता का विधान भिन्न अर्थ को अभिव्यक्ति देने के लिए किया जाता है। शिल्पकौशल की दृष्टि से लाक्षणिकता एक अमोघ बरदान है और नये कवियों ने उसका भरपूर लाभ उठाया है। नये कवियों के उक्ति वैचित्र्य के मूल में लक्षणा और व्यंजना का सूक्ष्म सौन्दर्भ निहित है। कनुप्रिया में

राधा की चंचल ऑखों की अभिव्यंजना हेतु कवि ने परम्परागत अप्रस्तुत का उक्ति वैचित्र्य पूर्ण कैसा नवीन विधान किया हैः

'तुम्हें तो मालूम है/कि मैं वही बावली लड़की हूँ न/ जो पानी भरने जाती है/तो भरे हुए घड़े में/अपनी चंचल ऑखों की छाया देखकर/उन्हें कुलेल करती चटुल मछलियां समझकर/बार–बार सारा पानी ढलका देती है।''

यहां केवल राधा की ऑखों की चंचलता को ही नहीं उसकी अबोधता और सरलता को भी व्यंजित किया गया है। कुछ उदाहरण और लेः

ओ मेरे अफसर/तुम्हारी एक लाइन ने मेरे जीवन की कविता को/निरर्थक कर दिया/बीच जिन्दगी में मैं एकाएक विधवा हो गया।

उपर्युक्त पंक्तियों का लक्षणा गर्भित उक्ति वैचित्र्य सर्वथा नवीन एवं मार्मिक है। अफसर की एक ही पंक्ति ने कवि की जिन्दगी की मधुरता को समाप्त कर दिया। जीवन की आश्रयहीनता और विवशता का अभिव्यंजक 'विधवा' शब्द यहां कितना भिन्न किन्तु साभिप्राय हो गया है। अज्ञेय की निम्न कविता भी नूतन उक्ति वैचित्र्य का सुन्दर **उदाहरण हैः**

'पति सेवा रत सांझ/अझकता देख पराया चांद/ललाकर ओट हो गई।'

पर पुरूष रूप चांद को झांकता देख, पतिव्रता सांझ का लजा कर ओट हो जाना कितना हृदयस्पर्थी है। लजा कर ओट हो जाने की किया द्वारा कवि ने सांध्यकालीन लालिमा की व्यंजित कर दिया है।

ाक्तियां है जो विशेषतः नयी कविता में प्रकट हुई है। काव्य में अलंकार की स्थिति लक्षणा पर आश्रित है। काकुवक्रोक्ति और अभिव्यक्ति की अनेक भंगिमाएं लक्षणाजन्य हैं। किन्तु लक्षणा का उद्देश्य इतना ही नहीं है। वह काव्य में चर्वणा का पोषण करती है, सुन्दर और भव्य मानसमूर्तियों को सिनेमा के पर्दे की तरह प्रोजेक्ट करती है। अतः पद–पद पर नयी कविता में लक्षणा का विलास दिखाई पड़ता है। मदन वात्स्यायन की कविता 'मिथिला में बाढ़' से कुछ पंक्तियां लीजिएः

'अरे यह कौन आता है/प्रलय के पार?/धहरता हिमवान से यह प्रलय–पारावार/उमड़ा है।/अरे हिमवान उतरा है/प्रलय लेकर।/कि आया अन्त दुनिया का/धरा धंसती/कहर है।

लक्षणा से भारत का विशाल हिमगिरि स्वयं जलमय होकर प्रलय पारावार का रूप धारण करके मिथिला में बाढ़ का कलात्मक सृजन कर सकता है।

अज्ञेय के अनुसार, प्रत्येक सफल उपभोक्ता शब्द की एक नया संस्कार देता है। लक्षणा प्रयोग के द्वारा शब्द को नूतन संस्कार देने की एक विधा है, शब्द शिल्प का एक कौशल। किन्तु, व्यंजना काव्य के द्वारा, मन के उन्मोचन की एक विधा है जो पाठक की शब्द द्वारा संकेतित अर्थालोक की ओर ले जाती है और वहां उसे मन की संचित निधियों के आस्वादन हेतु आह्वान करती है। नयी कविता में व्यंजना के नूतन प्रयोग हुए है। किरण जैन की एक कविता उद्धृत है जिसमें शब्दों के प्रबल संकेतों से मन को झकझोर देने वाली एक अनुभूति का काव्यात्मक सृजन हुआ हैः

'तुम्हारे लिये दौड़ती नदी से/झील बनी।/गति को/पत्थरों की खूंटियों पर लटकाया।/...../मेरे पतवार।/तुम्हारे लिये ही/मै उमड़–उमड़ कर लहरायी/कि एक बार, केवल एक बार/मेरी जड़ता चीर दो/मेरे मटियाले जल पर/एक चमकती रेखा खींच दो।

प्रस्तुत कविता में नारी की मनः स्थिति के लिए नदी का बिम्ब लिया गया है। हमारी परम्परागत शब्द–समीक्षा व्यंजना तक जाती है। नूतन समीक्षा में शब्द की उस शक्ति की ओर भी ध्यान गया है जिसे काव्य बिम्ब माना जाता है। नये कवि ने जीवन की विविध एवं गम्भीर वेदनाओं की काव्य सृष्टि के लिए, प्रकृति और जीवन के सभी अंतरालों में बिम्बों की खोज की है।

वातावरण को ध्वनित करने की इस नूतन पद्धति के साथ–साथ नयी कविता में चाक्षुष चित्र ध्वनि का प्रयोग भी द्रष्टव्य हैः

'रात में जब छा चुका खंडहर तिमिर में/तिमिर खंडहर में/घूमते से उस कांपती–सी वायु के स्वर में/अकेले गीत/'

अंधकार का सब वस्तुओं को घेरे लेना एक साधारण घटना है। उसी को चमत्कारी ढ़ंग से प्रस्तुत किया गया है। खंडहर तिमिर में समा गया है, और तिमिर खंडहर में अर्थात् दोनों तद्रूप हो गए है। अंधकार के गहराने का अत्यन्त प्रभावशाली वर्णन है।

कैसी बिडम्बना है कि सच बात हमें झूठ लगती है और विशेष ढंग से कहा गया झूठ सच समझा जाता है। सभ्यता के अप्राकृतिक आचार–विचार पर इसमें बड़ा व्यंग्य और क्या हो सकता है। इसी प्रकार श्रीराम वर्मा की प्रस्तुत पंक्तियों में जीवन की दीनता और निम्न मध्य वर्ग की विवश्ता कितने सहज शब्दों द्वारा व्यंजित की गई हैः

'सिनेमा की एक कड़ी गुनगुनाती हुई/पानी मिला दूध, मुन्नी नाच–नाच पीने लगी।'

पानी मिले दूध को पीकर प्रसन्न होने वाली मुन्नी सामाजिक विषमता और अर्थाभाव की ओर कैसा मार्मिक संकेत कर रही है। इस प्रकार लक्षणा एवं व्यंजना गर्भित उक्ति वैचित्र्य के अनेक नूतन रूप एवं भंगिमायें नयी कविता में व्यंजित हुई है।

निष्कर्ष

नयी कविता के अप्रस्तुत विधान के सौन्दर्यशास्त्रीय अनुशीलनोपरान्त स्पष्ट है कि नये कवियों ने अपनी नूतन सौन्दर्य दृष्टि के अनुरूप आधुनिक बोध को संवेध बनाने के लिए अप्रस्तुत विधान को विशेष आग्रहपूर्वक अपनाया है। अप्रस्तुत विधान के माध्यम से नये कवि नए यथार्थ और परिवर्तित परिवेश की अभिव्यक्ति में पर्याप्त सफल रहे है। परम्परागत रूढ़ियों को छोड़कर इन कवियों ने अप्रस्तुत विधान की नूतन पद्धतियों और नये अप्रस्तुतों की खोज की है। नये

अप्रस्तुत नये विशेषण और उक्ति वैचित्र्य की गई कथन भंगिमाओं को अपनाने के कारण नयी कविता का अप्रस्तुत विधान पूर्ववती काव्य धाराओं से भिन्न तो है ही साथ ही कवियों की वैयक्तिक एवं बौद्धिक दृष्टि से भी अनुप्राणित है। जीवन के अछूते, अनजान पक्षों एवं ज्ञान विज्ञान के अधुनातन क्षेत्रों से असंख्य टटके अप्रस्तुतों का चयन कर नये कवियों ने अपनी सृजनशीलता एवं मौलिकता का अनूठा परिचय दिया है। वे अप्रस्तुत नये कवियों के शिल्पाग्रह का परिणाम नहीं बल्कि उनकी सृजन प्रक्रिया के अभिन्न अंग रूप में आये है जिनमें प्रभावित करने का अपूर्ण सामर्थ्य है। नयी कविता का अप्रस्तुत विधान संक्रातिकालीन युग चेतना एवं नई संवेदना की अभिव्यक्ति में बड़ी दूर तक सहायक है।

सन्दर्भ

1. हिन्दी नयी कविता का सौन्दर्य शास्त्रीय अध्ययन – डॉ0 मन्जू गुप्ता
2. नयी कविता – डॉ0 देवराज
3. हिन्दी का अपना काव्य शास्त्र – डॉ0 सूर्य प्रताप दीक्षित, डॉ0 सत्य देव मिश्र
4. नयी कविता की भाषा – काव्य शास्त्रीय सन्दर्भ में – डॉ0 हरि प्रसाद पाण्डेय